समाजशास्त्रीय सिद्धांत: संघर्षवाद IV

(Sociological Theory: Conflict Theory IV)

डॉ. अनुराग कुमार पाण्डेय

सहायक प्रोफेसर

समाजशास्त्र विभाग

जे. एस. हिन्दू (पी. जी.) कॉलेज, अमरोहा

जॉर्ज सिमेल

- जन्म 1 मार्च 1858, बर्लिन
- बचपन में ही सफल व्यापारी पिता की मृत्यु
- अनेक पुस्तकों व लेखों के बावजूद अकादमिक जगत में कम प्रसिद्ध
- सीमेल ने वेबर तथा टॉनीज के साथ मिलकर जर्मन सोशियोलॉजिकल सोसाइटी की स्थापना की।
- सिमेल सबसे अधिक इमैनुएल कांत के विचारों से प्रभावित थे तथा इसी संदर्भ में वह अंतःक्रिया प्रक्रियाओं का विश्लेषण तथा प्रकार्यात्मक संबंधों की चर्चा करते हैं।
- डार्विन, स्पेन्सर, मार्क्स, वेबर से प्रभावित
- सिमेल ने सामाजिक व सांस्कृतिक घटनाओं का अध्ययन किया। उन्होंने सबसे विशिष्ट प्रकार की गतिविधि, जैसे राजनीति, अर्थशास्त्र और सौंदर्यशास्त्र में सामाजिक संपर्क के सामान्य रूपों को अलग करने की मांग की।

प्रमुख कृतियाँ

- *On Social Differentiation,* 1890
- *The Problems of Philosophy of History*, 1892
- *The Sociology of Georg Simmel,* 1902
- *Conflict and the Web of Group Affiliation*, 1908
- *The Philosophy of Money* (ed.), 1907

जॉर्ज सिमेल: समाजशास्त्र

- सिमेल के अनुसार अंतःक्रियाओं के स्वरूपों का अध्ययन ही समाजशास्त्र का प्रमुख उद्देश्य है।
- तीन प्रकार के समाजशास्त्र –
  - **सामान्य समाजशास्त्र**

    इसमें सामाजिक आधार पर निर्मित संपूर्ण ऐतिहासिक जीवन का अध्ययन किया जाता है।
  - **दार्शनिक समाजशास्त्र**

    सिमेल इसे सामाजिक विज्ञानों की ज्ञानमीमांसा कहते हैं।
  - **स्वरूपात्मक समाजशास्त्र**

    इसमें सामाजिकता के आधार पर निर्मित सहचर्या के रूपों का अध्ययन किया जाता है।
- सिमेल ने मानवीय अंतःक्रियाओं के विश्लेषण के लिए 'स्वरूपात्मक समाजशास्त्र' (प्रणेता) को प्रस्तावित किया।
- सिमेल पहले समाजशास्त्री हैं, जिन्होंने सामाजिक संबंधों के स्वरूप तथा अंतर्वस्तु (Form & Content) का मुद्दा उठाया।

जॉर्ज सिमेल: अंत:क्रियाओं का समाजशास्त्र

- सिमेल, स्पेन्सर के सावयवी सिद्धांत का विरोध करते हैं।
- सिमेल का तर्क है कि समाज में व्यक्ति कुछ भी नहीं है। वे दूसरे व्यक्तियों के साथ अंत:क्रियाएँ करते हैं। ये अंत:क्रियाएँ स्वरूपों (Forms) का निर्माण करती हैं।
- ये स्वरूप दुनिया के इतिहास में अलग–अलग रूपों में दिखाई देते हैं।
- ये रूप इतिहास की विभिन्नता तथा संस्कृति की विशेषता के साथ परिवर्तित होते हैं।
- समाज अंत:क्रिया की प्रक्रियाओं का जाल है। ये अंत:क्रियाएँ निरंतर क्रियाशील रहती हैं।
- इसी कारण सिमेल का समाजशास्त्र अंत:क्रियाओं, अंत:क्रिया के स्वरूपों तथा अंत:क्रिया की प्रक्रिया से बना हुआ है।
- जॉर्ज सिमेल के विचार तीन प्रमुख बिंदुओं के इर्दगिर्द विचरण करते हैं –
  - अंत:क्रियाओं के स्वरूप (Forms of Interaction)
  - अंत:क्रियाओं की प्रक्रियाएँ: सहयोगात्मक व असहयोगात्मक (Process of Interaction: Associative & Dissociative)
  - औपचारिक समाजशास्त्र (Formal Sociology)

जॉर्ज सिमेल: अंत:क्रियाओं का समाजशास्त्र

- मार्क्स तथा वेबर ने समाज के तार्किकीकरण तथा पूंजीवादी अर्थव्यवस्था जैसे वृहत स्तरीय मामलों को अपने अध्ययन–शोध का केंद्र बनाया, वहीं सिमेल ने प्रमुखतः व्यक्तिगत क्रिया तथा अंतःक्रिया जैसे लघु स्तरीय मुद्दों को ही समाजशास्त्र की प्रमुख अध्ययन विषयवस्तु माना है।
- चूंकि सामाजिक जीवन अनेक अंतःक्रियाओं से निर्मित होता है तथा इन सैद्धांतिक ढाँचों को समझ पाना दुष्कर होता है।
- ऐसे में सिमेल अंतःक्रियाओं के स्वरूपों व प्रकारों के अध्ययन पर जोर देते हैं। सिमेल के इन विचारों ने बाद में 'सांकेतिक अंतःक्रियावाद' के विकास को गहरे रूप में प्रभावित किया।
- सिमेल का मत है कि परिवार के समान ही समस्त सामाजिक संरचनाओं का निर्माण अंतःक्रियाओं के आधार पर होता है, वे अंततः अंतःक्रियाओं का परिणाम होती हैं।
- अंतःक्रियाओं के अध्ययन में सिमेल अंतःक्रिया में प्रतिभाग करने वालों की संख्या तथा संघर्ष की भूमिका को विशेष रूप से रेखांकित करते हैं।

संघर्षवाद: जॉर्ज सिमेल

- सिमेल के अनुसार संघर्ष अंतःक्रिया का एक प्रमुख स्वरूप है।
- सिमेल के शब्दों में, *'यदि मनुष्यों के मध्य क्रियाशील प्रत्येक अंतःक्रिया सामाजिकता को प्रकट करती है, तब संघर्ष को भी अनिवार्यतः सामाजिक माना जाना चाहिए। यह एकीकरण का एक ऐसा तरीका है, जिसमें व्यक्तियों में से किसी एक का नष्ट होना संभव है।'*
- पार्क व बर्गेस तथा कोजर भी सिमेल के विचारों से प्रभावित होकर संघर्ष के एकीकरण संबंधी प्रकार्यों का समर्थन करते हैं।

जॉर्ज सिमेल: स्वरूपों में द्वंद्व

- सिमेल का मत है कि अंत में चलकर व्यक्ति जो कुछ भी है, वह समाज की उपज ही है।
- हालांकि व्यक्ति समाज की उपज होते हुए भी समाज का विरोध करता है। सिमेल इसे ही द्वंद्व कहते हैं।
- सिमेल का तर्क है कि आनुभविक रूप से संसार में कोई ऐसा समाज नहीं है, जहां सामंजस्य (Harmony) तथा संघर्ष न हो।
- एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति के साथ जो संबंध होता है वह या तो अधिकारी का होता है अथवा अधीनस्थ का। बिना किसी अधिकार के व्यक्तियों में संबंध नहीं होते।
- सिमेल यहाँ कुछ तथ्य प्रस्तुत करते हैं –
  - समाजीकरण
  - स्वरूप तथा अंतर्वस्तु
  - सहयोगात्मक तथा असहयोगात्मक स्वरूप
  - समाज में सामंजस्य तथा संघर्ष: समाजशीलता (Sociation)

जॉर्ज सिमेल: संघर्षवाद

- सिमेल के अनुसार संघर्ष के दो कारण होते हैं –
  - व्यक्ति की संघर्षशील प्रवृत्ति
  - सामाजिक संबंधों के प्रकार
- ये दोनों तत्व संघर्ष को आवश्यक घटना बनाते हैं।
- **संघर्ष के परिवर्त्य**
  - समाज में नियमन की मात्रा
  - प्रत्यक्ष संघर्ष की मात्रा
  - संघर्षरत पक्षों में तीव्रता की मात्रा
- जब समाज में नियमन की मात्रा अधिक होगी, तो संघर्ष प्रतिस्पर्धा बनकर रह जाएगा तथा इससे संगठन मजबूत होगा। जबकि यदि समाज में हिंसा अधिक होगी, तो संगठन घटेगा।

जॉर्ज सिमेल: संघर्ष के परिणाम/ प्रकार्य

सिमेल के अनुसार संघर्ष का परिणाम संघर्षरत समूह तथा पूरे समाज पर पड़ता है।

- संघर्ष के परिणामस्वरूप संघर्षरत समूहों में एकता बढ़ जाती है।
- संगठित होकर संघर्षरत समूह जब प्रयास करते हैं, तो तीव्र संघर्ष की मात्रा घटती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि संगठित समूह की धमकी मात्र से ही लक्ष्य की प्राप्ति हो जाती है तथा तीव्र संघर्ष या हिंसा की नौबत ही नहीं आती, इसे सामाजिक एकीकरण बढ़ता है।
- संघर्षरत समूहों का संघर्ष जितना तीव्र होगा, उन समूहों का संगठन व आंतरिक व्यवस्था उतनी ही अधिक संगठित होगी।
- यदि संघर्षरत समूह कम संगठित होंगे तथा संघर्ष की मात्रा तीव्र होगी, तो समूहों में तानाशाही प्रवृत्ति बढ़ेगी।
- यदि संघर्ष तीव्र तथा संघर्षरत समूह अल्पसंख्यक होंगे, तो उनमें आंतरिक एकता बढ़ेगी।
- जब संघर्षरत समूह आत्मरक्षा के लिए संघर्ष करेगा, तो उसमें संगठन व एकता प्रबल होगी।

सिमेल संघर्ष सिद्धांत में सहयोगात्मक तथा असहयोगात्मक दोनों ही प्रवृत्तियों को महत्व देते हैं।

Next Class:

समाजशास्त्रीय सिद्धांत: संघर्षवाद V

(Sociological Theory: Conflict Theory V)